ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-1* Issue-11* February- 2017
Anthology : The Research

विविध काल में संगीत की शिक्षा

राजेन्द्र माहेश्वरी
प्राध्यापक,
संगीत विभाग,
राजकीय कला कन्या
महाविद्यालय, कोटा, राजस्थान,
भारत

सारांश

इस प्रकार हम देखते हैं कि विभिन्न काल मे संगीत की शिक्षा का रूप उत्तरोतर परिवर्तित होता रहा है। पुरातन काल में जहां शिक्षा का स्वरूप गुरूमुखी था, वह वर्तमान में सामुदायिक स्वरूप ले चुका है। इसका लाभ अन्त्तोगत्वा शिक्षाार्थी को भी हुआ है एवं शिक्षक को भी ओर आगे भी अन्य कई माध्यम दृष्टिगोचर होगें।

मुख्य शब्द : गुरूकुल, वैदिक, संगीत, प्रयाग,संस्कृति।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही संगीत शिक्षा का विशेष महत्व रहा है। इसे गुरू के समीप रहकर ही प्राप्त किया जा सकता है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य जीवन को उन्नत व सभ्य बनाया जा सकता जाता है। संगीत शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मानव को सभ्य व संस्कारों से परिपूर्ण बनाया जा सकता है। संगीत शिक्षा ही मानव के संर्वागीण विकास का एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा व्यक्तित्व का विकास किया जा सकता है एवं शिक्षा के द्वारा ही हमारे समाज व राष्ट्र को नवीन दिशा प्रदान की जा सकती है। संगीत शिक्षा का अर्थ केवल स्वर युक्त धुनों व रागों को सीखना ही नहीं अपितु संगीत के साधना पक्ष को प्रबल बनाने हेतु विद्यार्थियों का ध्यान संगीत की और आकर्षित करना है।

संगीत शिक्षा के माध्यम से शिक्षार्थियों का चहुमुखी विकास किया जा सकता है तथा शिक्षार्थियों के विकास में संगीत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वैदिक समय में भी यही विश्वास था कि शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक व आध्यात्मिक विकास होता है। वर्तमान में भी इसी विश्वास पर शिक्षा की नींव रखी गयी है।

वैदिक काल में संगीत शिक्षा का माध्यम गुरू शिष्य परम्परा ही था। इस परम्परा में शिष्य अपने गुरूजनों से सीखकर अन्य शिष्यों को सीखाता था। शिक्षा ग्रन्थों में ऐसे संकेत निहित है जिनसे ज्ञात होता है की आरम्भिक युग में वैदिक शाखा, ब्राह्मण, आरण्यक उपनिषद, सूत्र, आदि विषयों का अध्ययन अध्यापन विद्यालयों में होता था जिन्हे प्राचीन साहित्य में चरण कहते थे। वैदिक साहित्य में साम प्रशिक्षण के तीन रूप प्रचलित थे।[1]

1. पिता पुत्र के रूप में
2. गुरू शिष्य परम्परा के रूप में
3. गुरूकुल में जाकर शिक्षा प्राप्त करना

वैदिक काल में आधुनिक समय की भॉति आर्थिक शुल्क का कोई प्रावधान नहीं था। शिक्षा समाप्त होने के पश्चात् शिष्य अपने गुरू के समक्ष अपने सामर्थ्य के अनुसार कुछ भी उपहार स्वरूप प्रस्तुत करते थे। इसके अतिरिक्त वरिष्ठ विद्यार्थी आगन्तुक शिक्षार्थियों को शिक्षा प्रदान करते थे। शिक्षा सम्पूर्ण होने पर विद्यार्थी गुरूजनों एवं गुणीजनों के समक्ष बैठकर उनके प्रश्नों के उत्तर देता था और सही उत्तर देने पर ही वह योग्य कहलाता था।[2]

प्राचीन काल में संगीत शिक्षा का स्वरूप

भारत में वेंदो के समय से ही संगीत शिक्षा गुरूमुख से दी जाती थी। संगीत की दृष्टि से इस प्रकार की शिक्षा उचित है क्योंकि संगीत एक ऐसी कला है जो मस्तिष्क द्वारा कम तथा हृदय द्वारा अधिक ग्राह्य है। संगीत की शिक्षण प्रक्रिया में उस समय साम संगीत का शिक्षण देते समय भावी उद्गाता को पहले आर्चिक ग्रंथों की शिक्षा दी जाती थी गायन को सुदृढ़ बनाने के लिए दीर्घ–श्वास क्रिया का अभ्यास किया जाता था।[3]

रामायण काल के पाठ्यक्रम में वेद तथा षट् वेदांगों का अन्तर्भाव था, इसके स्पष्ट प्रमाण रामायण में प्राप्त होते है। संगीत के संदर्भ में मुनि व्याल्मिकी

के द्वारा लव–कुश को दी गई स्वर–पद ताल, प्रमाण, मूर्च्छना आदि की शिक्षा के उल्लेखों से ज्ञात होता है की उस समय में संगीत शिक्षा का व्यवस्थित स्वरूप था जिसके अन्तर्गत संगीत के शास्त्र एवं क्रियात्मक पक्ष दोनो ही समाविष्ट थे। इस काल में संगीत शिक्षा का आन्तरिक पक्ष भी प्रबल व व्यवस्थित था।[1]

महाभारत काल में संगीत शिक्षा का स्वरूप अत्यन्त व्यवस्थित था। इस काल के राजाओं में रसास्वादन की पर्याप्त क्षमता विधमान थी। स्त्रियों को संगीत शिक्षा देने के लिए गुणीजनों को राजभवनों में नियुक्ति दी जाती थी। बड़े–बड़े नगरों में संगीत शालाओं का प्रबन्ध शासन की और से किया जाता था । पाणिनि के काल में संगीत शिक्षा की दशा उत्कृष्ट रूप में विधमान थी।[2]

बौध काल में तक्षशिला विद्या दान का प्रमुख केन्द्र था, वाराणसी बौद्व काल का दूसरा विद्या केन्द्र था जिसमें संगीताध्यापन का एक स्वतंत्र विभाग था। नालन्दा, विक्रमशिला तथा तदन्तपुरी जैसे अन्य विश्वविद्यालयों में भी गार्न्धव का स्वतन्त्र निकाय अथवा फैकल्टी थी तथा इसके अधिष्ठाता के रूप में भारत विख्यात संगीतज्ञों की नियुक्ति की जाती थी। इनके पाठ्यक्रम में गीत, वाद्य, नृत्य नाट्य, वीणा, वेणु तथा मृदंग की शिक्षा सम्मिलित थी। इस युग में संगीत कला को यथेष्ट राजाश्रय सम्मान प्राप्त था ।[3]

मध्यकाल में संगीत शिक्षा का स्वरूप

मध्यकाल में संगीत शिक्षा की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं थी एवं संगीत केवल राजदरबारों की शोभा बनकर ही रह गया। मध्यकाल में संगीत शिक्षा का माध्यम गुरू शिष्य परम्परा ही था। संगीत मन्दिरों से निकलकर राजदरबारों में पहुँच गया। संगीत आध्यात्मिक दृष्टि से हटकर मनोरंजन का साधन बन गया। इस युग में गायन–वादन एवं नृत्य ये तीनों ही कलाएँ प्रभावित हुई फलस्वरूप अनेक वाद्य यन्त्रों तथा गीत शैलियों का विकास हुआ।

मध्ययुग मे विभिन्न गीत शैलियों तथा वाद्यों यन्त्रों के प्रचार के कारण इसें संगीत का स्वर्ण युग भी कहा जा सकता है। घराने में निहित संकिर्णता के कारण संगीत शिक्षा प्रमुख व योग्य शिष्यों को ही दी जाती थी एवम् शिष्य से इस बात का वचन भी लिया जाता था कि वह गुरू द्वारा सीखी हुई विद्या को किसी अन्य को नहीं सीखायेगा अर्थात संगीत को छुपाकर रखा जाता था। घराना शिक्षा पद्धति की मुख्य विशेषता यह थी कि गुरू शिष्य को अपने जैसा ही धुरन्दर कलाकार बनाना चाहता था। गुरू द्वारा शिष्य का परीक्षण किया जाता था। उसके बाद ही उसे शिक्षा प्रदान करते थे। गुरू एवं शिष्य के बीच पुत्र तथा पिता जैसे संबंध कायम रहता था। शिष्य को अपने घराने व घराने में प्रचलित नियमों तथा परम्पराओं का पालन करना अनिवार्य समझा जाता था। इन विशेषताओं के कारण ही घरानों ने संगीत को सुरक्षित रखते हुए अपनी जड़े इतनी गहरी जमा रखी है जिसका प्रभाव वर्तमान समय में भी दिखाई पड़ता है अर्थात वर्तमान में भी यह परम्परा जीवित है।मध्यकाल में संगीत शिक्षा का माध्यम गुरू शिष्य परम्परा ही था एवं मुगल काल के पश्चात् भारत आधुनिक काल का आगमन हुआ तथा इस काल में घरानों का अन्त होने लगा और संगीत शिक्षा विद्यालय शिक्षा में परिवर्तित हो गयी।

आधुनिक काल में संगीत शिक्षा का स्वरूप

आधुनिक समय में प्रचलित संगीत शिक्षा का व्यापक प्रचार–प्रसार हुआ है। संगीत शिक्षा में नए–नए उपक्रम, संगीत, शिक्षा की सुलभता विभिन्न संगीत संबंधी पाठ्य पुस्तकों की रचनाएँ आदि क्रान्तिकारी परिवर्तन आज हमारे समक्ष प्रकट हुए है। वर्तमान परिवेश में संगीत को बढ़ावा देने हेतु देश की सभी राज्य सरकारों व भारत सरकार द्वारा इसे ऐच्छिक विषय के रूप में शिक्षा से जोड़ा गया है। आज देश के सभी राज्यों में स्थित संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में संगीत विषय को भी अन्य विषयों की भांति पढ़ाया जा रहा है। इसकी बदोलत आज देश के सभी राज्यों में संगीत विद्यार्थियों की भरमार है।

ये सभी संगीत विद्यार्थी संगीत साधना के साथ–साथ संगीत विकास एवं प्रचार–प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। आज देश के विभिन्न राज्यों में स्थापित विश्वविद्यालयों में संगीत को स्नातक, स्नातकोत्तर व पीएच.डी. पाठयक्रमों में सम्मिलित किया गया है। आज कई संगीत विधार्थी संगीत में अधिस्नातक व पीएच.डी. की उपाधियाँ प्राप्त कर चुके है एवं कुछ लोग कार्य में संल्गन है।

वर्तमान समय में विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त देश में अनेक संगीत संस्थाओं की भरमार है जो संगीत के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। इन प्रमुख संस्थाओं में भातखण्डे संगीत विश्वविद्यालय लखनऊ, प्रयाग संगीत समिति इलाहाबाद, सुर सिंगार ससंद मुम्बई, अखिल भारतीय गान्धर्व महाविद्यालय मण्डल मुम्बई, माधव संगीत विद्यापीठ ग्वालियर एवं इन्द्रा कला संगीत विश्वविद्यालय खैराबाद,मध्यप्रदेश का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है, जो प्रति वर्ष लाखों संगीत विद्यार्थियों को शिक्षा के साथ–साथ उन्हे उपाधियाँ भी प्रदान करता है। संगीत विकास हेतु देश की सुप्रसिद्ध संगीत संस्था स्पिक मैके जो लगातार संगीत के प्रचार–प्रसार व संगीत विरासत को संरक्षण प्रदान कर रही है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत लेख का उद्देश्य भारतीय संस्कृति में संगीत की शिक्षा किस प्रकार दी जाती थी, उसे रेखांकित करना है। वैदिक काल में संगीत की शिक्षा का स्वरूप क्या था और आधुनिक युग में संगीत की शिक्षा के स्वरूप में कितना परिवर्तन आया है, उसे स्पष्ट करना है। गुरू–शिष्य परम्परा से लेकर महाविद्यालयी संगीत शिक्षा के स्वरूप का वर्णन करना है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त सभी बिन्दुओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि वैदिक काल से लेकर मध्यकाल तक संगीत शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा द्वारा ही दी जाती थी। वर्तमान समय में संगीत शिक्षा गुरू शिष्य परम्परा तथा संस्थांगत शिक्षण दोनो के द्वारा दी जा रही है।

भारतीय संस्कृति में प्राचीन काल से ही संगीत शिक्षा का विशेष महत्व रहा है। प्राचीन काल में जहाँ

संगीत शिक्षा का व्यवस्थित रूप था वैसा मध्यकाल में नहीं था। मध्यकाल में संगीत शिक्षा की कोई निश्चित व्यवस्था नहीं थी । आधुनिक समय में संगीत विषय को देश के सभी राज्यों में स्थित संगीत विद्यालयों, महाविद्यालयों व विश्वविद्यालयों में अन्य विषयों की भांति पढ़ाया जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1 *डॉ. मृत्युजंय शर्मा , संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 382*
2 *डॉ. मृत्युजंय शर्मा , संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 383*
3 *डॉ. मधुबाला सक्सैना, भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्वरूप पृष्ठ संख्या 105*
4 *डॉ. मृत्युजंय शर्मा , संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 64*
5 *डॉ. मृत्युजंय शर्मा , संगीत मैनुअल पृष्ठ संख्या 65*
6 *डॉ अमरेश चन्द्र चोबे, संगीत की संस्थागत शिक्षण प्रणाली पृष्ठ संख्या 18*
7 *डॉ. मधुबाला सक्सैना, भारतीय संगीत शिक्षण प्रणाली एवं उसका वर्तमान स्वरूप पृष्ठ संख्या 60*
8 *ओमकार नाथ ठाकुर – प्रणव भारती (1997)*
9 *शेलेन्द्र कुमार गोस्वामी – भारतीय संगीत संग्रह (2004)*
10 *जतिन्द्र सिंह खन्ना – नाद और संगीत (1996)*
11 *डॉ. शरदचन्द श्रीधर परांजपे –भारतीय संगीत का इतिहास (1994*